वीराङ्गना महारानी कैकेयी

वैद्य गोपीनाथ पारीक 'गोपेश'

कैकेयी केकय देश के अधिपति अश्वपति की प्यारी पुत्री और अयोध्या के सम्राट दशरथ की प्रिय महारानी थी। नृपति अश्वपती ने अपने पुत्र युधाजित् की भाँति अपनी पुत्री कैकेयी को भी शस्त्र एवं शास्त्र में पूर्ण पारङ्गत बनाया था। अश्वपति और महाराज दशरथ घनिष्ठ मित्र थे। जब अपने पिता के समक्ष युधाजित् ने उनके राज्यारोहण की स्वर्ण जयन्ती मनाने का प्रस्ताव रखा तो पिता ने यह प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस समारोह को एक भव्य रूप देने में पिता-पुत्र ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। दूर-दूर देशों के जिन राजा-महाराजों को इस कार्यक्रम में आमन्त्रित किया गया था उनमें अयोध्या के नरेश महाराज दशरथ भी एक थे। इस समारोह के विविध कार्यक्रमों में एक अश्वारोहण और एक रथसंचालन की प्रतियोगिता भी रखी गयी थी। इन दोनों प्रतियोगिताओं में बहुत से कुशल पुरुषों ने भाग लिया था इनमें महिला केवल एकमात्र कैकेयी ही थी। कैकेयी से युधाजित् तीन वर्ष बडे थे। उस अश्वारोहन की प्रतियोगिता में युधाजित् ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था और रथसंचालन प्रतियोगिता में कैकेयी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने का दायित्व अश्वजित ने महाराज दशरथ को ही सोंपा था। जब कैकेयी अपना पुरस्कार प्राप्त करने हेतु महाराज दशरथ के समक्ष उपस्थित हुई तो महाराज अयोध्यानरेश ने कहा था– 'आज मैं अपने जीवन में प्रथम बार किसी ऐसी नारी को देश रहा हूँ जिसमें पुरुषों के समकक्षा खड़े होने का नहीं, उनको ललकारने का भी साहस है। वह नृपति बड़ा सौभाग्यशाली होगा, जिसके राजप्रासाद की राजकुमारी कैकेयी शोभा बढायेगी।'

दशरथ के मुख से कैकेयी की प्रशंसा सुनकर अश्वपति अत्यन्त प्रसन्न हुये और ऐसी पुत्री को पाकर गौरवान्वित हुये। किन्तु सहसा उन्हें वह राजज्योतिषी का कथन स्मरण हो आया जिसमें उसने कैकेयी के जन्म के अवसर पर कहा था– 'यद्यपि आपकी लाड़ली बेटी को चक्रवर्ती सम्राट की महारानी बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा किन्तु आपकी आँखों की पुतली को तिरस्कृत होकर जीना पडेगा।' यह ध्यान में आते ही कैकय नरेश के मुख पर सहसा उदासी छा गई।

केकय देश का वह राजा आस्तिक विचारों का था। धर्म, ज्योतिष आदि में वह पूर्ण विश्वास करता था। श्री वासुदेश अग्रवाल के अनुसार केकय जनपद झेलम, शाहपुरा और गुजरात प्रदेश का पुराना नाम था, जिसमें इस समय खिउड़ा की नमक की पहाड़ी है। केकय जनपद राजाधीन था। वहाँ के निवासी (क्षत्रिय गोत्रापत्य) कैकय कहलाते थे। भर्गादिगण में भी केकय का पाठ है। (पाणिनीकालीन भारतवर्ष)।

जब युधाजित और कैकेयी को अपने पिता के द्वारा यह ज्ञान हुआ कि महाराज दशरथ शब्दबेध

विद्या में पूर्ण कुशल हैं तो वे उनका यह चमत्कार देखने को आतुर हो उठे। पिता, पुत्र और पुत्री ने जब यह चमत्कार दिखाने का आग्रह किया तो पहले तो महाराज दशरथ ने मना कर दिया। श्रवणकुमार की घटना के बाद उन्होंने इस कला के प्रदर्शन से सर्वथा मुख मोड़ लिया था। किन्तु दोनों भाई-बहिनों के अत्यधिक आग्रह पर उन्होंने स्वीकृति प्रदान कर दी।

दूसरे दिन ही जंगल में जाकर यह कला दिखाने हेतु शासन द्वारा प्रबन्ध किया गया। महाराज दशरथ, युधाजित और कैकेयी ने पृथक्-पृथक् अश्वों पर आरूढ होकर वन में प्रस्थान किया। साथ में अंगरक्षक के रूप में तीन यौद्धा आगे और तीन योद्धा उनके पीछे रवाना हुये। कुछ दूर वन में जाने के पश्चात् वनराज सिंह की दहाड़ सुनाई दी। उस गर्जना को सुनते ही महाराज दशरथ ने अपना बाण चलाया और वह बाण गर्जना की दिशा में जाकर सिंह के शरीर में जा लगा और वह वहीं मूर्च्छित होकर जमीन पर गिर गया। इसके तुरन्त बाद सिंह के धराशायी होने पर सिंहिनी क्रुद्ध होकर दौड़ी आई और युधाजित् पर झपटने को उद्यत हुई। यह देखकर पलक झपकते ही कैकेयी ने बाण सिंहिनी पर चला दिया और वह मृत्यु के मुख में चली गई। इस घटना से महाराज दशरथ की शब्दबेध कला की अपेक्षा राजकुमारी कैकेयी की बहादुरी की घर-घर में अधिक चर्चा होने लगी। महाराज दशरथ भी राजकुमारी की इस विरोचित कुशलता से अत्यधिक प्रभावित हुये थे।

अब तो अवध नरेश राजकुमारी कैकेयी को अपनी प्रिय अर्द्धाङ्गिनी बनाने को लालायित हो उठे और उन्होंने यह प्रस्ताव अश्वपति के समक्ष रख ही दिया। इस प्रस्ताव को सुनकर नृपति अश्वपति दुविधा में पड़ गये कि क्या किया जाय?

एक तो उस समय महाराज दशरथ की आयु कैकेयी से दुगनी थी। महाराज यदि 40-44 वर्ष के थे तो राजकुमारी 20-22 वर्ष की ही थी। और फिर महाराज के दो रानियाँ पहले से ही थी। अश्वपति को यह भी ज्ञात था कि महाराज अपनी बड़ी रानी कौशल्या से अधिक स्नेह करते थे। ऐसी स्थिति में वे असमंजस में थे। फिर भी उन्होंने इस सम्बन्ध में अपनी पत्नी, अपने पुत्र और स्वयं पुत्री से परामर्श लेना उचित समझा। उन्होंने समय पाकर तीनों से परामर्श लिया। इसमें युधाजित् ने तो इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया था किन्तु महारानी और कैकेयी ने इसे अस्वीकृत नहीं किया था। राजा अश्वपति महाराजा दशरथ के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर उन्हें नाराज नहीं करना चाहते थे। वे जानते थे कि महाराज को नाराज करने से राज्य पर कोई संकट उत्पन्न हो सकता है। आखिर में युधाजित् भी इस शर्त पर राजी हुआ कि उनसे यह वचन ले लिया जाय कि कैकेयी से उत्पन्न पुत्र ही आपका उत्तराधिकारी होगा।

कैकेयी के भाई के कथन को विवश होकर ही सही, अयोध्यानरेश ने स्वीकारते हुये वचन दे ही दिया और दोनों के पाणिग्रहण की तैयारियाँ होने लगी। दोनों परिणय सूत्र में बंध गये। जब महाराज दशरथ की रानी बन कर कैकेयी अयोध्या के लिये प्रस्थान करने लगी तब उसकी माता ने कहा कि-

'बेटी! तुम अयोध्या के राजप्रासादों में सजग होकर रहना। मैं तुम्हारे साथ अपने प्रतिहारी की पुत्री मंथरा को भेज रही हूँ। यह तुम्हारी हर प्रकार से सहायता करेगी। वहाँ होने वाली प्रत्येक गतिविधि से तुम्हें यह अवगत कराती रहेगी और सजग बनाती रहेगी। तुम इसे पूरी तरह से सम्मान देना, यह तुम्हारा कभी अहित नहीं होने लगी। कई बार ऐसे अवसर आते हैं जब केवल शस्त्र-शास्त्र काम नहीं आते, वहाँ पर चतुराई से काम लेना होता है। यह चतुर दासी ऐसे समय तुम्हारी सहायता करेगी।

दस दिनों के प्रवास के पश्चात् महाराज दशरथ अपनी नव परिणता रानी के साथ अपने प्रासाद में प्रविष्ट हुये। चारों तरफ हर्ष छा गया। नई रानी का सभी ने हर्ष भरे उत्साह के साथ स्वागत किया। तीनों रानियों के प्रति महाराज का स्नेहपूर्ण व्यवहार था। बड़े आमोद-प्रमोद के साथ राजा दशरथ का दाम्पत्य जीवन बीत रहा था। यद्यपि वे नई महारानी कैकेयी पर अधिक आसक्त थे किन्तु दोनों अन्य महारानियों से भी पूर्ववत् स्नेह रखते थे। कैकेयी का महाराज को अपने राज-काज में भी सहयोग मिलता रहता था। प्रजा इन नृपति के आधिपत्य में बहुत प्रसन्न थी।

कुछ दिनों के पश्चात् ही अमरावती से देवराज इन्द्र का अपनी सहायता करने हेतु महाराज के पास सन्देश आया। एक असुर जिसका नाम शम्बर था, वह बड़ा मायावी एवं प्रबल योद्धा था। वह दण्डकारण्य के वैजयन्त नामक नगर में रहता था। उसने अपने पराक्रम से देवताओं को भयभीत कर रखा था। उस असुर को परास्त करना इन्द्र के वश की बात नहीं थी। उसे विश्वास था कि यदि महाराज दशरथ सहायता करें तो वह असुर मारा जा सकता है। अतः देवराज ने सहायतार्थ महाराज से निवेदन किया था।

जब महाराज इस युद्ध हेतु प्रस्थान करने को उद्यत हुये तो महारानी कैकेयी ने भी उनके साथ युद्ध में भाग लेने की इच्छा प्रकट की। महाराज भी यही चाहते थे, उन्होंने सहर्ष महारानी को स्वीकृति दे दी। कुशल सारथी को लेकर दोनों दम्पती रथ में आरूढ होकर युद्धस्थल पर पहुँच गये। देवराज इन्द्र महाराज और महारानी को अपने समक्ष पाकर बड़े प्रसन्न हुये और वे अपनी विजय के लिये पूर्ण आश्वस्त हो गये।

सारथी ने रथ को दौड़ा कर समरभूमि में लाकर खड़ा कर दिया जिस रथ में आयोध्यानरेश अपनी धर्मपत्नी वीराङ्गना कैकेयी के साथ आरूढ थे। यह देखकर देवराज इन्द्र की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने गद्गद् होकर महाराज और महारानी का हृदय से अभिवादन किया। आज उन्हें असुरों के विनाश में कोई सन्देह नहीं रहा। असुर शम्बर भी नवीन योद्धा को देखकर भयभीत हो गया।

घोर संग्राम प्रारम्भ हुआ। अधिक देर तक जबरदस्त मुठभेड़ होने के कारण महाराज थक गये। उन्हें तन्द्रा की झपकी सी आने लगी। अवसर पाकर असुरों ने उनके सारथि को मार गिराया। कैकेयी ने तत्काल मोर्चा संभाला। घोड़ों को भागने से रोकने के लिये उसने अश्वों की लगाम को मुख में लेकर

धनुष चढाया। इस प्रकार बाण वर्षा कर पति की रक्षा करने में सफल हुई। सारथि भी दूसरा आया और महाराज सावधान होकर पुनः युद्ध करने लगे। सहसा कैकेयी की दृष्टि रथ के उस धुरे पर पडी जो शत्रु के बाण से टूट कर दूर जा गिरा था। वह तत्काल रथ से नीचे कूद पड़ी और रथ के धुरे के स्थान पर अपनी पूरी भुजा लगा दी। महाराज तो युद्ध में सन्मय थे। यदि वह रथचक्र को रोकने के लिये ऐसा प्रयास नहीं करती तो महाराज भूमि पर गिर पड़ते।

कुछ ही देर में कुशल योद्धा महाराज के बाण से असुर शम्बर मारा गया और शेष सेना पराजित होकर भाग गई। अपनी प्रेयसी का रक्तरंजित हाथ देखकर अवधपति महाराज दशरथ को अपनी वीराङ्गना के लिये कहना पड़ा– 'प्रिये! तुमने सारथि के स्थान पर अश्वों की लगाम थामकर और रथचक्र में अपनी भुजा लगाकर मेरे प्राणों की दो बार रक्षा की है, अतः तुमको जो अभीष्ट हो, वे दो वरदान माँग लो।

'प्राणनाथ! आपकी सुरक्षा से बढकर मेरा क्या अभीष्ट हो सकता है? मैं आपकी इस प्रकार सेवा कर सकी-यह मेरे लिये श्रेष्ठ वरदान है।' पतिपरायणा कैकेयी का यह उत्तर सुनकर महाराज के मुख पर असुर विनाश से बढकर प्रसन्नता छा गई। महाराज के अधिकाधिक आग्रह को देखते हुये महारानी ने यह कहकर बात टाल दी कि 'मुझे जब आवश्यकता होगी, तब ये दो वरदान माँग लूँगी।'

देववैद्यों ने महारानी की आहत भुजा का उपचार किया। देव समुदाय ने साकेत नृपति दम्पती का जयघोष किया और देव राज ने कहा– 'ऐसी होती है भारत की वीराङ्गना।'

अध्यक्ष, राजस्थान आयुर्वेद विज्ञान परिषद,
21, रामेश्वर धाम, मुरलीपुरा स्कीम, जयपुर

शोध संस्थान में प्रकाशित पुस्तकें

1.	प्रस्थानभेदः	मधुसूदन सरस्वती
2.	सर्वविध पतन महान न कन्या की याचना न कन्या का दान	पं. अनन्त शर्मा (भारतीय विद्या मनीषी)
3.	ऋग्वेद यजुर्वेद के पुरुष सूक्त पर एक चिन्तन	पं. अनन्त शर्मा
4.	परिभाषेन्दुप्रिया (व्याकरण)	आचार्य पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा
5.	कौटिल्य अर्थशास्त्र भू वन्दना की सनातन आर्षदृष्टि	पं. अनन्त शर्मा
6.	काश्मीरगौरवम्	डॉ. रामदेव साहू
7.	विश्व गुरुदीपः मनुस्मृति	पं. अनन्त शर्मा
8.	हिन्दुधर्म परम्परा (एक वैज्ञानिक विवेचन)	श्रीमती अंजना शर्मा